प्राक्कथन

राजेंद्र अवस्थी हिंदी कथा साहित्य में अल्पाविधि में अपनी अलग पहचान बनानेवाले प्रतिभा संपन्न, प्रतिभाशाली एवं चर्चित कथाकार है। राजेंद्र अवस्थी ने हिंदी कथा साहित्य में मौलिकता और गुणात्मकता की दृष्टि से असाधारण योगदान दिया है।

एम् फिल के विषय चयन के लिए मैंने ऐसे बहुचर्चित लेखक का साहित्य पढ़ना प्रारंभ किया। विशेषत: उनके 'महुआ आम के जंगल' कहानी संग्रह को मैंने पढ़ा और मुझे यह एहसास हुआ कि उन्होंने अपने साहित्य में 'आदिम' जनजीवन को केंद्र में रखकर आदिमों के जीवन के विविध आयामों को अपनी साहित्यिक लेखनी का प्रमुख विषय बनाया है। आदिम जनजीवन को उन्होंने समाज के सामने लाने का प्रयास करते हुए आदिम जीवन के विविध पहलू, आदिम समाज की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति , उनकी प्रथा-परंपरा, आदिम जीवन की समस्याएँ, समाज में उनका स्थान आदि पहलुओं को उन्होंने सामाजिक यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। इसी सामाजिक वास्तविकता को केंद्र में रखकर मैंने अपने मार्गदर्शक श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.यादवराव धुमाळ जी से विचार विमर्श एवं चर्चा की और आप की अनुमति और स्वीकृति के पश्चात प्रस्तुत विषय का चयन कर लघु शोध-प्रबंध पूरा करने का विनम्र प्रयास किया है।

शोध विषय का महत्त्व :

'राजेंद्र अवस्थी के 'महुआ आम के जंगल' कहानी संग्रह में आदिम जनजीवन का चित्रण' इस विषय को लेकर शोध-कार्य संपन्न नहीं हुआ है इसी कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषय लेकर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की रचना की गई है।

शोध-कार्य के दौरान उभरे प्रश्न :

राजेंद्र अवस्थी जी के विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों पर शोध-कार्य आरंभ करते समय मेरे सामने जो प्रश्न उपस्थित हुए वे इस प्रकार हैं -

1 राजेंद्र अवस्थी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा होगा?

.....

2 विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जीवन के कौन-कौन से पक्ष एवं पहलू प्रतिबिंबित हुए होंगे?

3 राजेंद्र अवस्थी के विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिमों की किन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया होगा?

4 राजेंद्र अवस्थी ने अपनी कहानियों में आदिमों के कौन-कौन से विभिन्न रूपोंका चित्रण किया होगा?

इन सभी प्रश्नों के प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के 'उपसंहार' में दिए गए हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन और विश्लेषण किया है -

❖ **प्रथम अध्याय ः आदिम जनजीवन का स्वरूप**

प्रस्तुत अध्याय में आदिम शब्द का अर्थ, भारत के आदिमों की दशा, प्रमुख राज्यों केअंतर्गत आनेवाली जनजातियाँ,भारत के प्रमुख आदिमों में अंधविश्वास, उनकी रूढ़ि-परंपराएँ,उनकी आर्थिक स्थिति,उनकी विवाह-विधियाँ,उनके उत्सव-पर्व आदि के आधार पर आदिम जीवन के विविध पहलुओं का विवेचन किया गया है और यह स्पष्ट किया है कि भारत के आदिमों के जनजीवन में विविधता के दर्शन कैसे होते हैं।

❖ **द्वितीय अध्याय ः राजेंद्र अवस्थी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत राजेंद्र अवस्थी के जन्म से लेकर अब तक की उनकी जीवन रेखा को अंकित किया है, जिसमें जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा, नौकरी, पारिवारिक जीवन, काव्य सृजन का प्रारंभ आदि का संक्षिप्त विवेचन किया है। व्यक्तित्व में उनके विविध पहलुओं को अंकित किया है। कृतित्व के अंतर्गत रचनाओं के नाम तथा प्रकाशन वर्ष का विवरण देकर यह स्पष्ट किया गया है कि राजेंद्र अवस्थी जी के व्यक्तित्व का उनके साहित्य पर कैसे प्रभाव पड़ गया है और उनके साहित्य की मूल संवेदना जगह-जगह पर कैसे कैसे प्रगट हो गयी है।

.....

❖ **तृतीय अध्याय : विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियाँ**

प्रस्तुत अध्याय में आदिमों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करते हुए आदिमों में स्थित अंधविश्वास, आदिम नारी की स्थिति, अवैध यौन-संबंध, उनके लोकगीत, उनकी पारिवारिक स्थिति, शिक्षा संबंधी मान्यताएँ, उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर आदिम जीवन के विविध पहलुओं का विवेचन करके यह दिखाया है कि आदिमों की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में अभी तक आर्थिक परिवर्तन नहीं हो चुके है। वे स्थितिशील बनकर जीवन यापन कर रहे हैं।

❖ **चतुर्थ अध्याय : विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की प्रथाएँ एव परंपराएँ**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत आदिमों के जीवन की विविध प्रथा-परंपराओं के आधार पर विवेचन किया है, जिसमें लमसेना रखना, दूध लौटना, घोटुल की प्रथा, भूल-विवाह, गुदना गुदाना, तीज-त्यौहार, तम्बाकू बाँटना आदि प्रथा-परंपराओ पर गहराई से चिंतन करते हुए यह दिखाया है कि आज भी ये आदिम लोग इन प्रथाओं का पालन अत्यंत ईमानदारी के साथ कर रहे हैं। आदिमों के बीच के शिक्षित लोग भी इन प्रथाओं का पालन करने में अपवाद नहीं रहते हैं।

❖ **पंचम अध्याय : विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जनजीवन की समस्याएँ**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत आदिमों की विविध समस्याओं का विवेचन किया है जिसमें अंधविश्वास की समस्या, जातीय भेदाभेद की समस्या, नारी शोषण की समस्या, अंग्रेजों द्वारा शोषण की समस्या, बहुविवाह की समस्या, नशापान की समस्या आदि। इन समस्याओं के माध्यम से यह दिखाया है कि आदिमों का जनजीवन विविध प्रकार की समस्याओं में घिरा हुआ है।

.....

❖ **षष्ट अध्याय : राजेंद्र अवस्थी के 'महुआ आम के जंगल' कहानी संग्रह की भाषाशैली**

प्रस्तुत अध्याय में कहानियों का संक्षिप्त कथानक, कहानियों का शिल्पगत अनुशीलन, विवेच्य कहानी संग्रह की भाषाशैली, शैली स्वरूप एवं महत्त्व का विवेचन किया है। इस अध्याम में दिखाया है कि आदिम जनजीवन पर आधारित कहानियों में पात्रानुकूल भाषा-शैली का प्रयोग करके भाषा और परिवेश को कहानीकार ने जिंदा बनाया है।

'उपसंहार', उपसंहार में इस लघु शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

शोध कार्य की मौलिकता :

1 राजेंद्र अवस्थी जी की कहानियों के आदिम पात्रों का गहराई से अध्ययन करते हुए आदिम जीवन के प्रत्येक पक्ष को चित्रित किया है।

2 आदिम लोग विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियों में किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते हैं, इसका विवेच्य कहानियों के आधार पर सूक्ष्मता से विवेचन किया है।

3 आदिमों के जीवन में आनोवाली विविध समस्याओं का उनके जीवन पर होनेवाले गहरे असर को कहानियों के माध्यम से तलाश कर दिया है।

4 राजेंद्र अवस्थी की कहानियों में चित्रित उपेक्षित, दूर-दराज पहाड़ियों में बसे आदिमों के संघर्षरत जीवन को वर्णित किया है।

5 आदिमों में स्थित प्रथा-परंपराओ का गहराई से चिंतन किया है।

6 आदिमों की बोली भाषा के स्वरूप को जगह-जगह पर दिखाने का प्रयत्न किया है।

.....

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोधकार्य के संकल्प की पूर्ति श्रद्धेय आदरणीय शोध निर्देशक डॉ.यादवराव धुमाळ पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के मार्गदर्शन में हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मार्गदर्शक के रूप में आपका उपलब्ध होना मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण और खुशी की बात है। यह लघु शोध-कार्य गुरूवर्य डॉ.यादवराव धुमाळ जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। आपने मुझे प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध आप ही के सुयोग्य मार्गदर्शन का फल है।आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभव है।अत: आपके प्रति श्रद्धा प्रकट करते हुए आशा करता हूँ कि आपका आशीर्वाद आगे भी मिलता रहेगा। इस शोध-कार्य की संपन्नता में मुझे गुरूपत्नी सौ.नयना धुमाळ उनके पुत्र डॉ.क्षितिज तथा उनके परिवार के सभी सदस्यों ने प्रोत्साहित किया है।इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ.अर्जुन चव्हाण, हिंदी विभाग अध्यक्षा डॉ.पद्मा पाटील, डॉ.भाऊसाहेब परदेशी, डॉ.शोभा निंबाळकर तथा ए.सी.एस. कॉलेज, हातकणंगले के विभाग अध्यक्ष डॉ.मोहन सावंत जी का मैं ऋणी हूँ जिन्होंने समय-समय पर प्रोत्साहन देकर कार्य को पूरा करने में मेरी सहायता की है। इन सब का आत्मीय सहयोग इस लघु शोध-कार्य के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। अत: इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य पूर्ति में सफल हुआ हूँ।मेरे पिता योसेफ चंदर जमणे तथा मेरी माता रंजना योसेफ जमणे इस कार्य पूर्ति के लिए मुझे

पोत्साहित करते रहे। मैं निरंतर उनके आशीर्वाद की छत्र छाया में रहने की कामना करता हूँ। मेरे बड़े भाई अरूण ने तथा भाभी माया ने पहले से ही प्रेरणा देने का काम किया। साथ ही मेरी बड़ी बहन संगीता ने और सुनिता ने भी इस लघु शोध-कार्य को पूरा करने में मेरी बहुत मदद की है। अत: मैं इन सभी का ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-कार्य को पूरा करने में मेरे दोस्तों ने मुझे समय-समय पर मेरी मदद की अत: इन सबका मैं आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को संपन्न करनें में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के ग्रंथपाल तथा ग्रंथालय के कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। जिन्होंने संबंधित विषय के ग्रंथ उपलब्ध करा देकर मेरी सहायता की। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनका सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस लघु शोध-कार्य में किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का टंकनकार्य सुचारू रूप से करनेवाले 'प्रशिक कॉम्प्युटर्स' के श्री. अविनाश कांबळे जी का मैं विशेष आभारी हूँ।

अंत में मैं उन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों का जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ है उन सभी का आभारी हूँ। भविष्य में इन सभी लोंगों से आशीर्वाद तथा सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबं विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 30.06.2008

शोध-छात्र

अमोल योसेफ जमणे